वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर

स्यादवादो वर्त्तते यस्मिन पक्षपातो न विद्यते। नास्तन्म पीड़नं किंचते, जैन धर्मः स उच्चते।।

अर्थात जिसमें स्यादवाद वाणी का अस्तित्व हो, किसी के प्रति पक्षपात न हो, साथ ही किसी को पीड़ा न पहुँचाने की बात हो, वह जैन धर्म है।

भगवान महावीर जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर थे। उनका आविर्भाव लगभग 2600 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर में हुआ। सभी प्रकार का राजसी वैभव उन्हें उपलब्ध था पर उनका मन उसके सुखोपभोग में नही लगा। भगवान महावीर के आगमन से पूर्व अज्ञानवाद, अनिश्चितवाद, नियतिवाद, भौतिकवाद, अक्रियावाद, यज्ञवाद एवं क्रियाकांडवाद आदि ने समाज में निराशा उत्पन्न कर दी थी। संसार में व्याप्त तृष्णा, अनीति और हिंसा में झुलसते समाज के लिये ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अनेकांतमयी दृष्टि के आलोक में लोगों के हृदय से अंधकार को दूर कर सके। महावीर ने लोकजीवन में व्याप्त बुराइयों का अध्ययन किया। महावीर ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जिसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। मानव मात्र समाज हो और सभी को जीने का अधिकार हो अल्पायु 8 वर्ष की अवस्था में उन्होने कई नियमों को धारण किया था - (1) जीवों पर दया करना (अहिंसा वृत्ति) (2) सत्यवादिता (3) अचौर्यवृत्ति (4) ब्रह्मचर्य एवं (5) इच्छाओं को सीमित करना आदि। सबके मूल में है आत्म विजय। भगवान महावीर ने आस्था की स्वाभाविकता (उसके अनंत गुणादि की अभिव्यक्ति) आत्मविश्वास, आत्मज्ञान एवं आत्मसंयम को पूर्ण रुप से स्वयं प्राप्त कर लिया तब दूसरो को उस मार्ग पर चलने को कहा। भगवान महावीर इस धरती पर ज्ञान का अमृत स्त्रोत बहाने आये थे। उन्होने 30 वर्षो तक निरंतर विहार कर धरती के क्लेशों को दूर किया। उस समय उनके द्वारा किये गये अनेक कार्य है जैसे-

महावीर ने जाति का भेद मिटा कर प्रत्येक व्यक्ति के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका कहना था कि श्रेष्ठता का आधार जन्म नही बल्कि कर्मगुण है

"कम्मुणा वइस्सो होई कम्मुणा होई खत्तिओ। कम्मुणा वइस्सो होई सुददो होई कम्मुनणा।।

अर्थात व्यक्ति कर्मों से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्रहोता है। अर्थात इस कर्म के कारण ही व्यक्ति को अच्छी गति सुख-दुख प्राप्त होते है। मैक्समूलर के अनुसार यदि किसी मनुष्य को यह मालूम पड़े कि मुझको जो कुछ भोगना पड़ता है वह मेरे पूर्व जन्मकृत कर्मों का ही फल है तो वह पुराने कर्ज को चुकाने वाले मनुष्य की तरह सहज व शान्त भाव से कष्ट सहन कर लेगा और भविष्य को सुधारने का प्रयत्न करेगा।

(2) भगवान महावीर ने इहलौकिक और पारलौकिक सुख के लिये होने वाले यज्ञादि कर्मकांडो की अपेक्षा संयम तथा तपस्या के मार्ग को प्रमुखता दी। महावीर की संपूर्ण जीवन दृष्टि अहिंसा, संयम और तप में आ जाती है। जैसे अहिंसा आत्मा है संयम श्वास है और तप उसका शरीर है और इन तीनों का योग ही महावीर है।

(3) भगवान महावीर ने पुरुषों की तरह स्त्रियों के जीवन विकास के लिये भी पूर्ण स्वतंत्रता दी और विद्या तथा आचार दोनों में स्त्रियों की भी पूर्ण श्रेष्ठ योग्यता को स्वीकार किया है।

(4) महावीर का अनेकांतवाद सिद्धांत वैचारिक उदारता के विभिन्न आयाम उपस्थित करता है। महावीर ने किसी वस्तु को एक ही दृष्टिकोण से देखना एकांगी समझा था। उन्होने 'ही' की अपेक्षा 'भी' पर जोर दिया। आज विभिन्न वर्गों, जाति, समाज में जो कलह, संघर्ष दिखता है उसका वैयक्तिक कारण दुराग्रह ही है। अनेकांतवाद इन सब में सुसमन्वय स्थापित करता है।

(5) जैन धर्म में पर्यावरण के संरक्षण के लिये भी निर्देश उपलब्ध है। आज हम प्रकृति विजय के नाम पर प्राकृतिक साधनों का असीम दोहन कर रहे है अर्थात बड़ी मात्रा में भू-खनन, जल अवशोषण, वायु प्रदूषण, हम वनों को काटना आदि कर प्रकृति के साथ अन्याय कर रहे है। जैन धर्म का संदेश है कि हम प्रकृति एवं प्राणियो का नाश करके नही अपितु उनका सहयोगी बनकर जीवन जीना सीखे उनके संहारक बनकर नही क्योंकि उनका संहार प्रकारांतर से अपना ही संहार है। इन कारणों से आज जीवन अधिकाधिक अप्राकृतिक और असहज होता जा रहा हैं। प्रदूषण न केवल पर्यावरण में, पर विचारो के सूक्ष्म लोक में भी पहुँच चुका है। परिणामस्वरुप आत्महत्या जैसी घटनाएँ बढ़ रही है।

(6) आज विश्व में आणविक और रासायनिक शस्त्रो की भी वृद्धि हो रही है। यह अंधी दौड़ सर्वविनाशक होगी। इस बात को भगवान महावीर ने पहले ही समझ लिया था।

आचारांग मे उन्होने कहा- **"अत्थि सत्य परेण पर- नत्थि असत्य परेणपरं"**

अर्थात शस्त्रों में एक से बढ़कर एक शस्त्र हो सकते है किन्तु अशस्त्र (अहिंसा) से बढ़कर कुछ नही है। आज सारा विश्व हिंसा, तनाव एवं आंतकवाद से ग्रस्त है भले ही आज मानव ने धरती से आकाश की ओर कदम बढ़ा लिये है पर कितना संत्रस्त कुंढित और विश्रृंखलित है आज का मानव ?

पर को त्याग कर स्वकेन्द्रित हो जाना। योग का परित्याग कर भोगावलंबन कर लेना। अंतर को उपेक्षित कर बाह्योन्मुखी ही रहना। आदर्श को छोड़ यथार्थ को ही जीवन का चरम मान लेना।

वर्तमान में सब समस्याओं की मूलभूत समस्या है धर्म और नैतिकता रुपी 'रज्जू' की टूटन। मनुष्य के देवत्व अंश (सद्प्रवृत्तियों) का विनाश और आसुरी अंश (असदप्रवृत्तियों) का प्रादुर्भाव। ऐसे समय में महापुरुषों के सिद्धांत सम्यक दिशा निर्देश करते है। सार रुप में कह सकते है कि वर्तमान में भगवान महावीर के सिद्धांत "अहिंसा परमोधर्म", "परस्परोपग्रहो जीवानाम्", "जियो और जीनो दो", भित्री में सव्व भुएसु (संसार के सब प्राणी मेरे मित्र है" - विशुद्ध नैतिक धर्ममय जीवन के लिये और समस्त विभिषिकाओं से बचने के लिये सार्थक है। भगवान महावीर की देन अनेकांतवाद वैचारिक संघर्ष से बचाता है, इसी तरह अहिंसा सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह से भी कई समस्याओं का समाधान होगा अर्थात वसुधैव कुटुंबकम, मैत्री, दया, क्षमा की भावना का प्रसार अनीति अत्याचार, रिश्वत खोरी से दूर रहने की कोशिश, परिग्रह परिमाण करना, इच्छाओं पर नियंत्रण आदि। उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों की इस वैज्ञानिक युग में आज उपादेयता ही नहीं, आवश्यकता भी है। आज के पदार्थवादी युग और तनावग्रस्त जीवन में मानव यदि सुख से जीना चाहता है तो जरुरी है महावीर की वाणी, उनका दर्शन हमारा पाथेय हो और जीवन का हर पल महावीर की उद्भावना से संयोजित संवर्द्धित रहे। किसी ने कहा है -

मरुस्थल को आग की नही, पानी की जरुरत है, संसार को कंजूस की नही, कर्ण दानी की जरुरत है, भूले भटके विश्व को फिर से नई राह मिलें, सचमुच आज महावीर जैसे ज्ञानी की जरुरत है।

- सुश्री डॉ. प्रतिभा जैन, इन्दौर

वर्तमान का चिंतन

वर्तमान समय की विषम परिस्थितियों के कारण समाजजनों के साथ एक चिंतन में भागीदारी चाहता हूँ कि कोई देश व समाज तभी अच्छा बनता है जब वहाँ के लोग अच्छे हो, भारत में आज हमारी आबादी बहुत कम होती जा रही है, जिससे देश में हिंसा, अनीति, अराजकता आदि बुराईयां बढ़ रही है। यह कैसी विडंबना है जिस देश में हम कभी बहुसंख्यक थे आज उसी में हम अल्पसंख्यक हो गये है। यदि हम आज भी नही संभलेगे तो आगे की स्थिति बहुत ही गंभीर होने वाली है। इस देश में जैनों से द्वेष रखने वाले बहुत है जो किसी न किसी तरह से हमारे साधुओं पर, उनकी निर्दोष चर्या पर एवं हमारे रीति रिवाजो पर कुठाराघात करने से नही चूकते। हमारी पुरातन ऐतिहासिक धरोहरों को, मंदिरों, मूर्तियों एवं धर्मशालाओं को तोड़ने का, हड़पने का एवं हमें राजनैतिक, विधिक, सामाजिक व आर्थिक नुकसान पहँचाने का प्रयत्न करते है। वे लोग इस प्रयत्न में काफी हद तक सफल भी हो जाते है क्योंकि हम संख्या में कम है, इतिहास गवाह है कि पुरातन काल से आज तक हमारे कितने युवाओं को डरा धमका कर या लालच देकर अन्य धर्म स्वीकार करने को विवश करते रहे है, जो न माने उन्हें मार दिया गया। आज हम देखते है कि हमारे कितने ऐसे मंदिर एवं मूर्तियां है, जो वीतरागी स्वरुप में थी उन्हें आज देवी देवता या अन्य सम्प्रदाय के मंदिर, मस्जिद या चर्च के स्थानों में पूजा जा रहा है। ये हमारी सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर थी, जो अब हमारे अधिकार में नहीं है। कारण हमारा राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव कम है, इसलिये सरकार भी हमारी बात नहीं सुनती है। क्योंकि देश में जहां एक तरफ वोट बैंक की राजनीति हो रही है हम उस जगह पर एकजुट नहीं है। देश में हमारा प्रभाव कम होने का सबसे बड़ा कारण हमारा अहं ही है क्योंकि हम इसी अहं के कारण एक नहीं हो पा रहे हैं। कभी हम रीति रिवाज, कभी पूजा पद्धति, कभी नये भेद के कारण आपस में विरोधाभास रखते है जबकि महावीर का मार्ग तो अनेकांत है जहाँ विवाद की कोई जगह ही नही है। महावीर के शासन में तो परस्पर विरोध रखने वाले पशु गाय और सिंह, सर्प एवं नेवला भी आपस में बैर भूलकर एक घाट पर पानी पीते थे फिर तो हम इंसान है। क्या हमे आपस में लड़ना शोभा देता है ? यदि हम अभी नही सुधरे तो भविष्य में हमारा मार्ग अनेक कंटकों अवरोधों से भरा हुआ होगा। इसलिये हमें आवश्यकता है कि हम एकता के सूत्र में बंधकर फूलों की माला की तरह रहे जिस तरह माला में कई रंग के एवं सुगंध के फूल एकसूत्र में बंधकर सुंदरता से शोभित होते है उसी तरह क्या हम भी देश में अपनी एकता से सुशोभित नहीं हो सकते है ? हमारा राजनैतिक, विधिक प्रभाव तो बढेगा ही साथ ही देश में जैनत्व का मान सम्मान भी बढ़ेगा। आज हमारी महती आवश्यकता है अपनी आबादी बढाने के साथ हम अपना नैतिक, बौद्धिक एवं आर्थिक स्तर ऊंचा उठायें तथा अपने साधर्मी भाईयों को वात्सल्य के साथ समाज एवं देश में आगे बढ़ने की प्रेरणा एवं साधन उपलब्ध कराये, जिससे भगवान महावीर का शासन युगों युगों तक जयवंत हो, जयवंत हो वीतरागी श्रमण संस्कृति। भगवान महावीर स्वामी की जय।

- अभिषेक राजेश जैन 'अभि', पन्ना